**माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 26 अप्रैल 2015 को दी आल इंडिया क्षत्रिय फैडरेशन, फरीदाबाद के भवन के भूमि–पूजन समारोह में दिया गया भाषण।**

इस शुभ अवसर पर हम सबके बीच में उपस्थित भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री श्री अशोक गजपति राजू जी, इस संस्था के प्रयास, संस्था के उद्देश्य और जिस मंतव्य को लेकर संस्था काम कर रही है, पिछले 9 वर्षों से उसको विचार देने वाले, उसकी स्थापना करने वाले, यद्यपि पदाधिकारी के रूप में उससे दूर रहने वाले मेरे ही प्रदेश के निवासी व प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री तथा वर्तमान में राज्यसभा सदस्य मान्यवर दिग्विजय सिंह जी, क्षेत्र के विधायक श्री विपुल गोयल जी और All India Kashatriya Federation के वर्तमान अध्यक्ष श्री पी. राघव राजू जी, इस संस्था के पूर्व अध्यक्ष मान्यवर चिन्ना स्वामी जी, इस संस्था में महामंत्री श्री विनय भंडोरिया जी और इस प्रोजैक्ट को इस प्रकार का मूर्त रूप देने वाले पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी मान्यवर श्री एम.सी.राणा जी, Kashatriya Federation के सभी पदाधिकारीगण, मंच पर विराजमान अन्य अतिथिगण और इस काम को पूरा करने के लिए, आशीर्वाद देने के लिए इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित भाईयो और बहनो!

आज के दिन जब इस महत्वाकांक्षी प्रक्रम की फरीदाबाद में स्थापना हो रही है, यह इस क्षेत्र के लिए बहुत गौरव का दिन है। बार–बार यह कहा जा रहा है कि यह अराजनैतिक मंच है और यह संस्था भी अराजनैतिक है। परन्तु दिग्विजय सिंह जी ने तो इस संस्था के संविधान में ही राजनीति करने वालों को संवैधानिक दृष्टि से ही अलग कर दिया है। वैसे इसकी कहने की ज्यादा जरूरत नहीं है। जब किसी कार्यक्रम में राज्यपाल उपस्थित होता है तो वह अराजनैतिक ही होता है। राज्यपाल की उपस्थिति सबसे बड़ा सबूत है कि यह मंच अराजनैतिक है।

एक दूसरी बात और है जो आपने देखी होगी कि इस मंच के उपर जो समाज की प्रगति में, समाज की उन्नति में, समाज के उत्थान में और बच्चों के योग्य प्रक्षिशण में विश्वास करते हैं, ऐसे सभी जन यहां पर उपस्थित हैं। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी की माताश्री का निधन हो गया, परसों। अगर वह दुखद घटना नहीं हुई होती तो वे भी आज मंच के उपर उपस्थित होते। मैं आज इस अवसर पर उनके लिए संवेदना प्रकट करता हूं व दिवंगत आत्मा के लिए शांति की प्रार्थना करता हूं।

एक बात और कहना चाहता हूं कि कल नेपाल के अंदर बहुत बड़ी दुर्घटना हुई है। उससे अपना देश भी प्रभावित हुआ है। अगर नेपाल में हजारों की संख्या में मौत हुई हैं, वहां के अस्पताल घायलों से भरे पड़े हैं, तो भारत ने सहायता के लिए हाथ बढाया है, विभिन्न प्रदेशों को सहायता के लिए काम दिया है, पंजाब और हरियाणा को भी भोजन के पैकेट भेजने के लिए कहा है। नेपाल में हजारों में और भारत के अंदर भी लगभग 50–60 मौतें हुई हैं। इसलिए कल की दुखद घटना के प्रति भी मैं संवेदना प्रकट करता हूं और आप सबकी तरफ से भी, ए.आई.के.एफ की तरफ से भी, आज के इस अवसर पर उस घटना के पीड़ितों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

आप जानते हैं कि यह प्रकल्प किसके विकास के लिए काम करेगा। विभिन्न प्रकार की जो प्रतिभाएं हैं, कई बार उन प्रतिभाओं को अवसर नहीं मिलते। अवसर भी अगर मिल जाते हैं तो पैसों का अभाव आड़े आता है। अगर किसी के अंदर प्रतिभा है, किसी के अंदर potential है तो किसी भी प्रकार की बाधा उसको न आए और वह अपनी potential का, अपने सामर्थ्य का, अपनी योग्यता का ठीक तरह से उपयोग कर सके, इसलिए यह केन्द्र फरीदाबद के लिए, खासकर हरियाणा के लिए बहुत बडी देन है। आप सब यहां पर इतनी देर से बैठे हैं और तप रहे हैं, यह जो तपन है वास्तव में राष्ट्र के लिए होनी चाहिए। अगर राष्ट्र के लिए तपन होती है, अगर राष्ट्र के अंदर कोई दुखद बात होती है तो उसकी आपको वेदना होती है। समाज के अंदर किसी तरह का अभाव है, आपके प्रयास से, आपके सहयोग से वह अभाव अगर दूर होता है तो यह बहुत अच्छी बात होती है। समाज के प्रति प्रत्येक नागरिक का, प्रत्येक घटक का यह कर्त्तव्य है कि वह समाज के साथ एकात्मकता भी स्थापित करे, समाज के साथ समन्वय स्थापित करे। राष्ट्र के साथ उसको एक होना चाहिए।

राष्ट्र की प्रगति के लिए, समाज के उत्थान और उन्नति के लिए यह जो मनुष्य का अंग–अंग विभाव है यह भारत की संस्कृति की भी पहचान है। यह राष्ट्र की उन्नति और उत्थान के लिए अति आवश्यक है। अगर राष्ट्र के प्रति संवेदना है, राष्ट्र के साथ अगर आपकी एकात्मकता है, राष्ट्र के साथ अगर आप जुडे हुए हैं तो समाज के अंदर किसी भी जगह, किसी भी तरीके की अगर आपदा होगी, किसी को अगर दुख होगा तो आपकी उसको वेदना होगी। जैसे आपके शरीर के अंदर विभिन्न अंग हैं। सिर से लेकर पैर तक विभिन्न अंग हैं। किसी अंग को अगर पीड़ा होती है तो उसका दर्द शरीर को होता है। अगर पैर में कांटा लगता है तो सीधे ही आवाज मुंह से निकलती है। अगर आपके सिर को अगर कोई चोट पहुंचाने की कोशिश करता है तो उसको बचाने के लिए आपके हाथ उपर उठते हैं।

अब कोई ज्यादा विद्वान व्यक्ति या वैज्ञानिक अगर पूछे कि सिर में चोट मारने से हाथ क्यों उठे? हाथों को क्या लेना था? या अगर कहे कि कांटा तो पैर में लगा था तो मुंह को क्या हो गया था? उसमें से क्यों आवाज निकलती है? अगर शरीर से यह प्रकट नहीं होता है तो हम यह कहेगें कि शरीर जिंदा नहीं है। यह शरीर चेतन नहीं है। यह शरीर अंग–अंग विभाव नहीं हैं और इसलिए कई बार ऑपरेशन करना होता है किसी जगह का तो आप उतनी जगह को सुन्न कर देते हैं। यह है अंग अंग–विभाव का मतलब। All India Kashatriya Federation ने इस बात को समझा है। इसने पूरे समाज को एक माना है। अगर हमारे समाज के अंदर किसी तरह का कष्ट आए, दुख–विपदा आए तो वह जो अंग है वह हमारा हिस्सा है। वह राष्ट्र का हिस्सा तो है ही। राष्ट्र के उत्थान के लिए उसके अभाव को दूर करने के लिए अगर आप लोग आगे आते हैं तो सच में आप समाज के भक्त हैं, राष्ट्र के भक्त हैं और देश के सफल नागरिक हैं, शुद्व और पवित्र नागरिक हैं।

इसी तरह के बहुत बड़े भाव की संरचना इस मंच के माध्यम से प्रारम्भ हुई है। कार्यक्रम में देखते ही देखते 27–28 लाख रूपये आ गए। बंगलौर में जब बैठे थे तब मैने 10 लाख की घोषणा अपने डिसक्रिसनरी फंड से की थी। लेकिन उसी समय

मुम्बई के एक महानुभाव ने, मुझे नाम याद नहीं आ रहा है, उन्होंने 25 लाख की घोषणा की थी। आप क्या सोचते हैं कि वे पैसे आ भी गए? तुरन्त वहीं दिये थे उन्होंने मेरे हाथ में और इसलिए यह प्रकल्प आपको एक अवसर दे रहा है। काहे का अवसर दे रहा है? समाज के लिए कुछ करने का और जो आदमी समाज के लिए कुछ नहीं करता, हम कैसे कहें कि वह समाज का अंग है। अगर आपका हाथ या शरीर का कोई भी अंग शरीर के लिए काम नहीं करता, उसके लिए पूरक नहीं बनता तो हम कैसे कहें कि वह शरीर का अंग है। इसलिए इस भाव को लेकर आगे बढना चाहिए।

आज जब मैने संस्था का गीत सुना तो संस्था के गीत के अंदर कितने सुंदर विचार थे–''जननी जन्मभूमि भारत कर्मभूमि शांति की पुण्यभूमि।'' जरा इन बातों का स्मरण कीजिए। जब आप इन बातों का स्मरण करते हैं तो आपके मन में एक बात आती है कि जननी जन्मभूमि कर्म और पुण्यभूमि का उल्लेख इस संस्था के गीत में कैसे हुआ। जननी जन्मभूमि भारत कर्मभूमि, शांति की पुण्यभूमि किसके मुंह से निकला था? यह घटना उस समय की है जब भगवान श्रीराम ने लंका पर विजय प्राप्त कर ली थी। लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात लक्ष्मण ने राम को सलाह दी थी कि आपने सोने की लंका पर विजय प्राप्त की है और भरत ने 14 वर्ष अयोध्या में रहकर तपस्या की है। जिस तरह आपने जंगल में जीवन बिताया है उसी तरह भरत ने अपना जीवन बिताया है वहां पर। तो आप क्यों नहीं सोचते कि भरत को अयोध्या पर राज्य करने दो और आप लंका पर राज्य करो। यह लक्ष्मण का सुझाव था।

इस सुझाव पर भगवान राम ने लक्ष्मण को कहा था कि लक्ष्मण यह लंका यद्यपि सोने की है लेकिन यह मुझे पसंद नही आती। भगवान राम आखिर में कहते हैं कि 'जननी जन्मभूमश्चि स्वर्गादपि गरीयसी'। जहां आपने जन्म लिया है वह जननी जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ कर है, स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। इस विचार को लेकर संस्था का गीत बनाने का जो संकल्प रहा है, उस संकल्प को लेकर जो संस्था चली हो उस संस्था को सहयोग करने से ऐसा लगता है जैसे गंगा में डुबकी मारने से आपके पाप दूर होते हों। मैं तो पहले भी इस संस्था का सदस्य नहीं बन सकता था, पदाधिकारी नहीं बन सकता था क्योंकि मैं राजनीति में था और अब तो बन ही नहीं सकता क्योंकि अब तो राजनीति से भी दूर हो गया, राज्यपाल बन गया। लेकिन मैं इस संस्था के थीम, इस संस्था के उद्देश्य से बहुत प्रभावित हूं।

दिग्विजय सिंह जी जब भी इस संस्था के लिए कहते हैं, मैं वहां पहुंच जाता हूं, सारे बैरियर तोड़कर पहुंच जाता हूं क्योंकि संस्था के विचारों के लिए आप जो करना चाहते हैं वह आज देश की आवश्यकता है, राष्ट्र की आवश्यकता है। आप जरा विचार तो करो राष्ट्र के लिए क्या चाहिए? आज राष्ट्र के लिए पुरूषार्थ चाहिए। आज राष्ट्र के लिए पराक्रम चाहिए। आज राष्ट्र के लिए वीरता चाहिए। आज राष्ट्र के लिए शौर्य चाहिए। आज राष्ट्र के लिए महाराणा प्रताप का संकल्प चाहिए। याद करो जरा सम्राट अशोक को, याद करो जरा सम्राट विक्रमादित्य को, याद करो राजा भोज को, याद करो महाराणा प्रताप को, याद करो छत्रपति शिवाजी को, ऐसे कितने नाम गिनाएं और इसलिए इनके नामों का जब विचार करोगे, पुरूषार्थ का जब विचार करोगे तो आपको

ध्यान में आएगा कि यह देश, यह भारतवर्ष कितना पुराना है। यह राष्ट्र कब जन्मा किसी को पता नहीं है। इस राष्ट्र को जन्म देने वाला कोई राजा नहीं था। बड़े–बड़े संत थे। यह राष्ट्र कैसा राष्ट्र है? विश्व में इतने राष्ट्र हैं, 193 तो संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य हैं। विश्व में इतने राष्ट्र हैं, आपने ऐसा राष्ट्र कहीं नहीं देखा होगा जिसने अपने इतिहास में किसी अन्य राष्ट्र पर हमला न किया हो। और राष्ट्र तो एक दूसरे के उपर आक्रमण करते हैं, हमारे उपर भी कई प्रकार के आक्रमण हुए हैं, लेकिन क्या आप एक भी घटना बता सकते हो जब भारत ने किसी पर आक्रमण किया हो?

यह जो भारत है, यह कितने वर्ष तक पराधीन रहा? लेकिन इतने वर्षों तक पराधीन रहने के पश्चात भी, पराधीन करने वाले के पूरे प्रयास के बाद भी, यह भारत भारत ही रहा। भारत की पहचान नहीं मिटी। युनान की मिट गई, मिस्र की मिट गई, रोमां मिट गए जहां से, बाकी है नामो निशां हमारा। कोई बात है ऐसी कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा। यह कौन सी बात है? जब उस बात को आप याद करेंगे तो भारतवर्ष का जो पुरूषार्थ है, भारतवर्ष का जो विचार है, भारतवर्ष की जो संस्कृति है, उसकी याद आती है।

भगवान ने जब समाज की रचना की, विभिन्न प्रकार के वर्ग बनाए तो हर एक को एक–एक गुण दिया। पहले तो जीवन रचना ही ऐसे थी। जैसे शरीर के अंदर सिर है, शरीर के अंदर भुजा है, शरीर के अंदर पेट है, शरीर के पैर हैं। हाथ क्षत्रियों के लिए, पेट वैश्यों के लिए और पैर क्षुद्र के लिए। यह रचना कर्म के अनुसार हुई। गीता में और पुराणों में इसका उल्लेख है। लेकिन जरा विचार करें कि जिन शरीर के अंगों की मैने चर्चा की, इनमें से सबसे महत्वपूर्ण अंग कौन सा है? सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हाथ है। बुद्धि से आप विचार कर सकते हो लेकिन विचार को आप कंडक्ट नहीं कर सकते। अगर हाथ काम न करे, आप खाना भी खाना चाहते हो पेट भी भरना चाहते हो तो बिना हाथ के नहीं खा सकते। कोई काम करने के लिए पैर से जा सकते हो लेकिन वहां काम नहीं कर सकते। सबसे महत्वपूर्ण तो हाथ हैं। यह कर्म का प्रतीक है यह पुरूषार्थ का प्रतीक है।

मैं ऐसा मानकर चलता हूं कि अपने देश में विभिन्नता है। सब प्रकार के वर्ग हैं, अन्य प्रकार के समाज हैं, लेकिन हर एक का अपना–अपना गुरू धर्म है। वह गुरू धर्म हर एक का बचना चाहिए, उसकी रक्षा होनी चाहिए, उसकी प्रगति होनी चाहिए। और सारे धर्मों के अंदर समन्वय होना चाहिए क्योंकि सब ईश्वर के पुत्र हैं। सबमें समन्वय और सामंजस्य चाहिए।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता होती है कि All India Kashatriya Federation का गठन तब हुआ जब दिग्विजय सिंह जी ने देखा कि पूरे देश में क्षत्रियों के संगठन तो कई हैं, लेकिन सब अपनी–अपनी बीन बजाते हैं, सब अपनी–अपनी बंसी बजाते हैं, सब अपने–अपने राग अलापते हैं। सारे के सारे संगठन सम्प्रदाय बन गए हैं, एक–दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं, पैर खीचते हैं एक दूसरे का और राजनीति का मोहरा बनते हैं। अगर इसी तरह से क्षत्रियों के संगठन देश में चलते रहे तो समाज का तो नुकसान करेगें ही, ये तो क्षत्रियों का भी नुकसान करेंगे। आप जरा विचार तो करो अगर किसी बस्ती के अंदर एक क्षत्रिय

रहता हो तो सारे के सारे उसकी बात मानते हैं। वह लीडर अपने आप बन जाता है। पता नहीं कौन सा गुण है उसमें? वह अपने आप लीडर बन जाता है। लेकिन विभिन्न स्थानों पर बहुत सारे लीडर हैं। वे आपस में ही लड़ मरे तब क्या होगा? इसलिए इस विचार को दूर करने के लिए All India Kashatriya Federation का जन्म हुआ है। सारे संगठनों को देश के ही नहीं विश्व के भी जहां पर क्षत्रिय संगठन हैं उन्होंने इससे सम्बद्धता ली है। नार्थ अमेरिका का संगठन इससे सम्बद्धता के लिए इच्छा प्रकट कर रहा है। और देश ही नहीं पूरे विश्व में क्षत्रिय समाज इससे सम्बद्ध होकर और क्षत्रिय समाज का जो मूलधर्म है, उस मूलधर्म की रक्षा करने के लिए आगे आऐं। उस मूलधर्म की रक्षा करने के लिए, उसे बचाने के लिए अगर कोई आपदा आती है, दुख आता है तो उसको दूर करें। उसको दूर करने के लिए इस तरह की संस्था की आवश्यकता है।

फरीदाबाद तो वैसे भी सौभाग्यशाली है कि यहां यह भवन बनकर खड़ा होगा। All India Kashatriya Federation का हैड आफिस यहां होगा। वे तो वैसे ही भाग्यशाली हैं कि हरियाणा का फरिदाबाद पूरे संगठन को यहां से चलाएगा। कितनी अच्छी बात है। इसलिए मैं अनुरोध करता हूं कि आप सब लोग एक संदेश लेकर जाएं कि इसके लिए जितनी आवश्यकता है, कोई भी आवश्यकता है, संसाधन की, पैसे की आप सब लोग पीछे नहीं रहेंगे। वैसे भी हरियाणा के लोग कभी पीछे नहीं रहते। वे तो हर जगह नम्बर एक हैं। खेलों के अंदर नम्बर एक हैं, सेना के अदंर नम्बर एक हैं, सब जगह हरियाणा नम्बर एक है। इसलिए इतना अच्छा प्रकल्प हमारे बीच में आया है तो इसको भी नम्बर एक बनाएंगे। मेरा बहुत–बहुत आर्शीवाद है और आप सबने ऐसे अच्छे अवसर पर मुझे बुलाया इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

जयहिन्द!